6

उत्तम संयम धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

: स्वर :
पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

: रचयिता :
कविवर पण्डित राजमल पवैया

: स्वर :
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

6

श्री उत्तम संयम धर्म पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

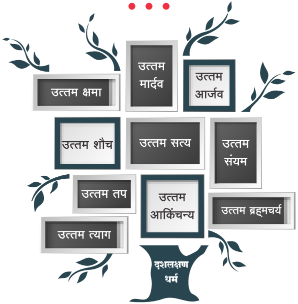

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री उत्तम संयम धर्मांग पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्थापना

(छन्द–रोला)

भाव द्रव्य संयम की शोभा से हो सज्जित।
राग–द्वेष मोहादि भाव से होकर लज्जित।।
करूँ शुद्ध आत्मा से ही प्रभु अपना परिचय।
उत्तम संयम व्रत धारूँ मैं है दृढ़ निश्चय।।

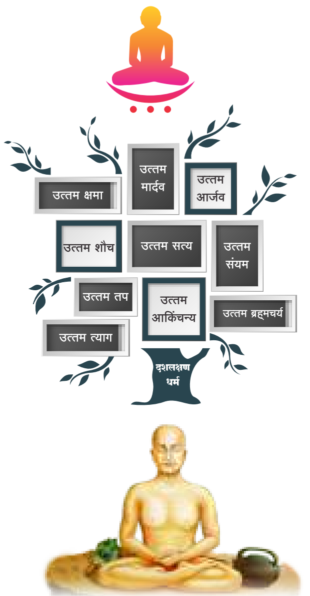

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्ग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्ग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्ग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

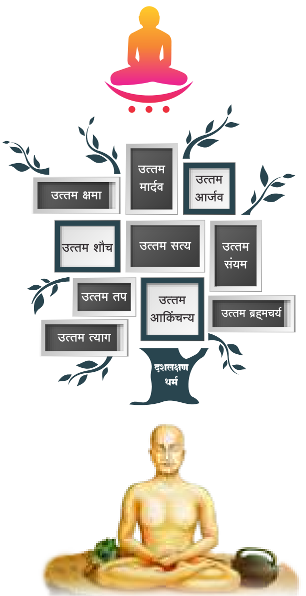

अष्टक
(छन्द–चौपाई)

पूर्ण देश संयम जल धारा। क्षय करती है भव दुखकारा।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

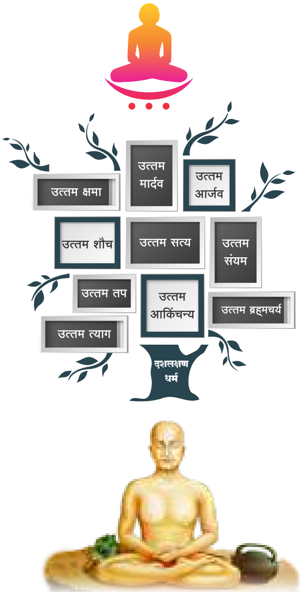

पूर्ण देश संयम का चन्दन। भवज्वर नाशक ताप निकंदन।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय क्रोधकषायविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

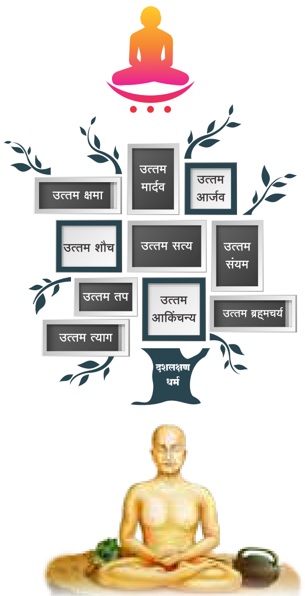

पूर्ण देश संयम के अक्षत। दाता है अक्षयपद शाश्वत।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय मानकषायविनाशनाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

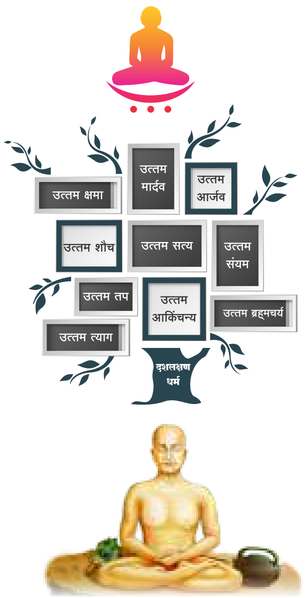

पूर्ण देश संयम कुसुमांजलि। कामबाण नाशक भावांजलि।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय मायाकषायविनाशनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

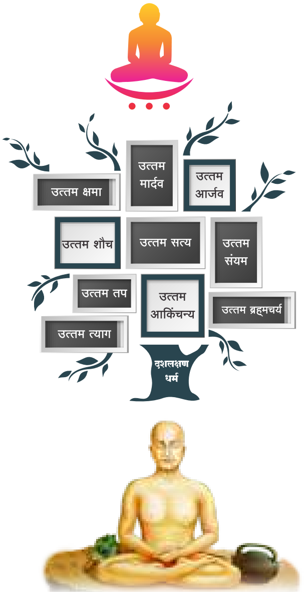

पूर्ण देश संयम उर लाऊँ। निज अनुभव रस सुचरु बनाऊँ।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय लोभकषायविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

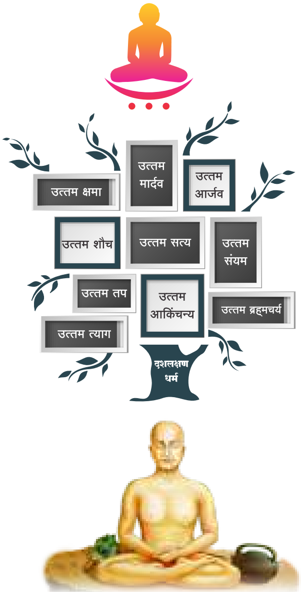

पूर्ण देश संयम ज्योतिर्मय। मोह विनाशक दीप स्वसुखमय।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पूर्ण देश संयम स्व–ध्यानमय। शुद्ध भाव की धूप धर्ममय।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय विभाव–परिणतिविनाशनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

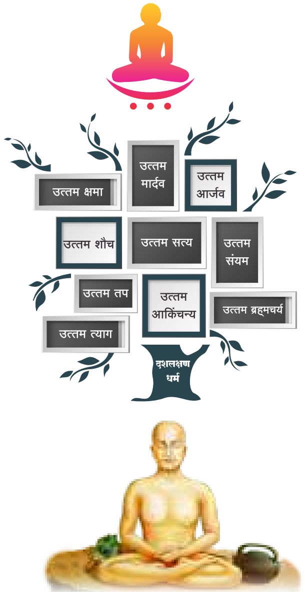

पूर्ण देश संयम फल पाऊँ। महामोक्ष फल ध्रुव प्रकटाऊँ।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

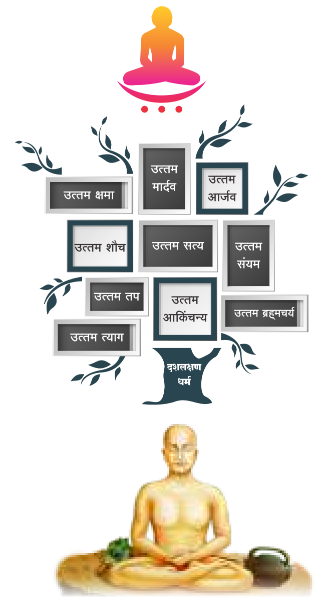

पूर्ण देश संयम के पावन। अर्घ्य बनाऊँ मैं मन–भावन।
उत्तम संयम भवदुखहारी। सिद्ध स्वपद दाता सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

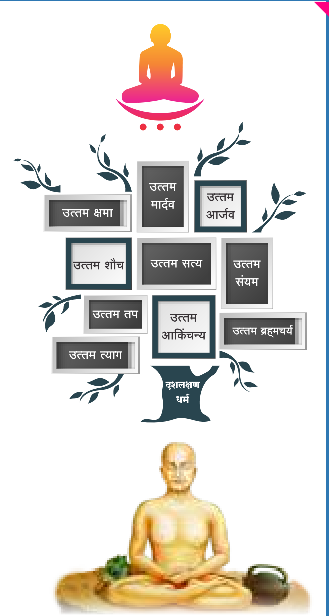

अर्घ्यावलि

(छन्द–सार/जोगीरासा)

भूमि काय की दया पालने के उर भाव जगाऊँ।
कुआ ताल खाई न खुदाऊँ निर्मलता उर लाऊँ।।
पृथ्वीकायिक की रक्षा हो पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

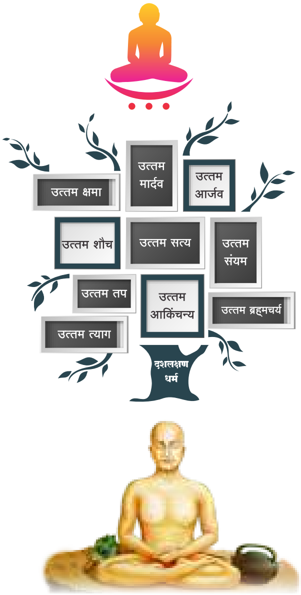

बिन छना जल कभी न वरतूँ छना हुआ वरतूँ जल।
नदी ताल आदिक न बनाऊँ व्यर्थ न ढोलूँ मैं जल।।
जलकायिक की रक्षा हो पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री जलकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

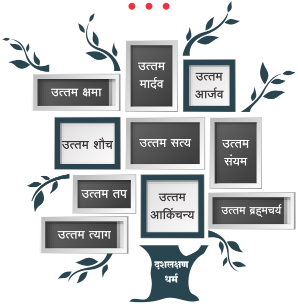

अग्नि कभी नहीं जलाऊँ करुणा उर में धारूँ।
नहीं बुझाऊँ अग्नि कभी भी जीव-दया उर धारूँ।।
अग्निकाय की रक्षा हो प्रभु पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

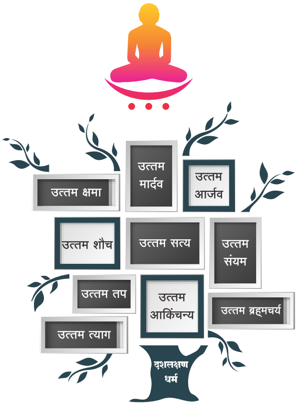

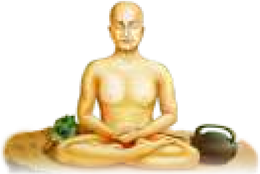

पंखा आदिक नहीं करूँ मैं जीव दया उर धारूँ।
महा ग्रीष्म हो तो भी स्वामी शीतलता उर धारूँ।।
वायुकाय की रक्षा के हित पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री वायुकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

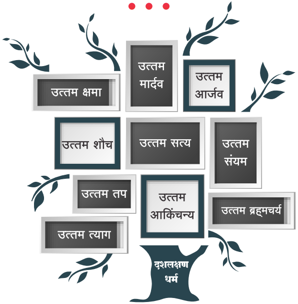

बाग–बगीचा नहीं लगाऊँ फूल–पात नहिं तोड़ूँ।
हरितकाय की दया विचारूँ निज से नाता जोड़ूँ।।
काय वनस्पति रक्षा हो प्रभु पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायिकजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

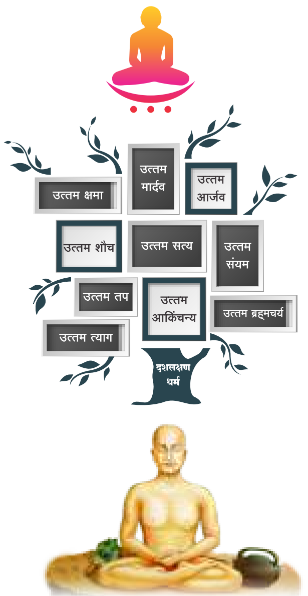

इल्ली जोंक गिंडोला आदिक सबको निजसम जानूँ।
दया–भाव इनके प्रति रखकर दया–धर्म पहचानूँ।।
दो इन्द्रिय की रक्षा हो प्रभु पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

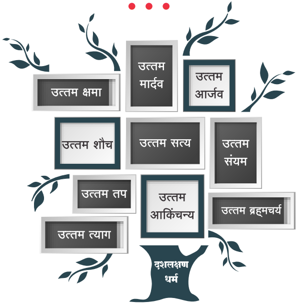

कुन्थु लीक खटमल चिंटी आदिक की दया विचारूँ।
दयाभाव हो इनके प्रति प्रभु दया धर्म उर धारूँ।।
त्रय इन्द्रिय की रक्षा हो प्रभु पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

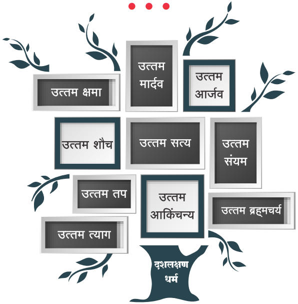

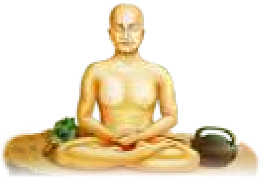

मक्खी भौंरा टिड्डी मच्छर जीव सभी हैं जानूँ।
पूर्ण-दया इनके प्रति रक्खूँ सबको प्राणी मानूँ।।
चउ इन्द्रिय की रक्षा हो प्रभु पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

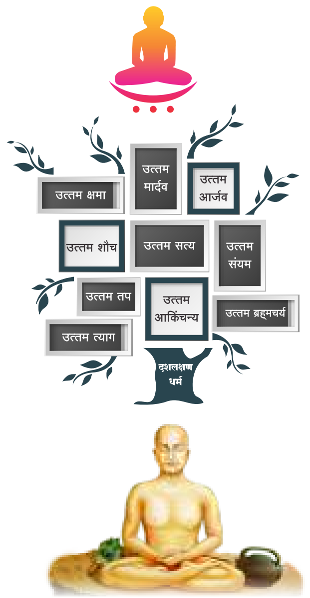

जीव असैनी विविध जगत में जलचर सर्पादिक हैं।
दयाभाव इनके प्रति हो प्रभु ये भी बहुत अधिक हैं।।
रक्षा असैनी पंचेन्द्रिय की पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री असंज्ञीपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

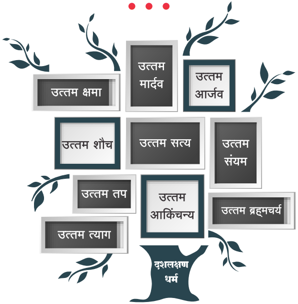

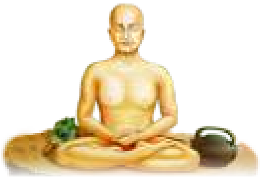

सुर नर नारक पशु संज्ञी सब जीव अनंतों जग में।
इनके प्रति भी दया हृदय हो जाऊँ नहीं भव-मग में।।
संज्ञी जीवों की रक्षा कर पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री संज्ञीपंचेन्द्रियजीवरक्षणरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

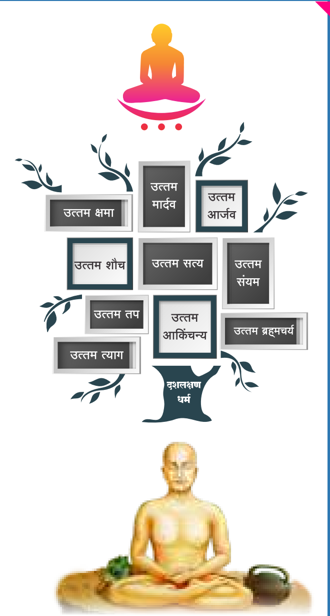

स्पर्शन इन्द्रिय को जीतूँ विषय भाव निरवारूँ।
शीत उष्ण की चाह न जागे निज की ओर निहारूँ।।
काय छहों प्रतिपालक होऊँ पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री स्पशनेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

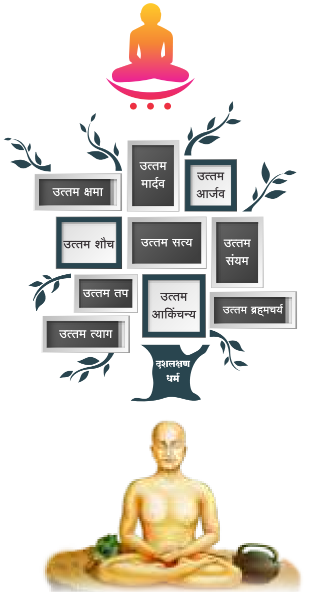

रसना इन्द्रिय के सुत पाँचों के वश होऊँ न स्वामी।
पाँचों अधोगति के कारण तुम जानत अन्तर्यामी।।
रसना इन्द्रिय जीतूँ प्रभुजी पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री रसनेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

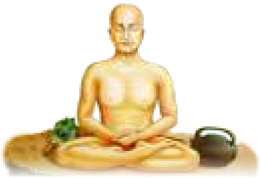

घ्राणेन्द्रिय के सुत दो ही हैं महा दुष्ट दुखदायी।
इनको जय करने की सुध-बुध जागी है सुखदायी।।
घ्राणेन्द्रिय को पूरा जीतूँ पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

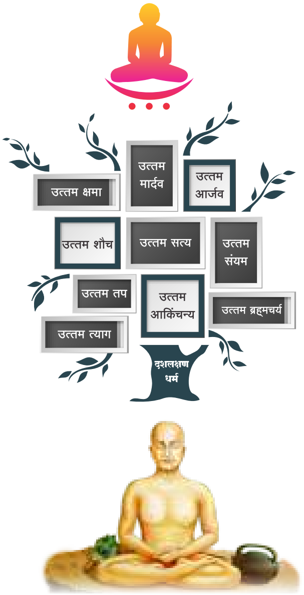

नेत्रेन्द्रिय के सुत पाँचों हैं घोर महादुख दाता।
इनके वश में होकर प्राणी रंच नहीं सुख पाता।।
इन्द्रिय चक्षु सदा को जीतूँ पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री चक्षुरिन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

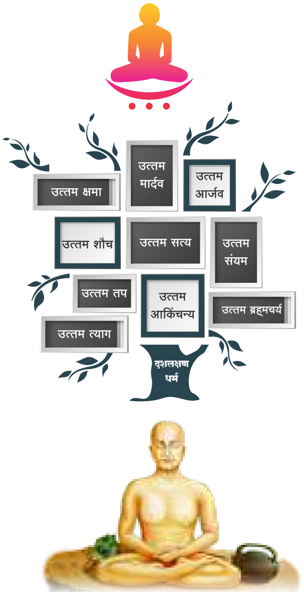

कर्णेन्द्रिय के वश में होकर वचन शुभाशुभ भाते।
सप्त स्वरों के वाद्य सुहाते जो भव मध्य भ्रमाते।।
कर्णेन्द्रिय को पूरा जीतूँ पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रियविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

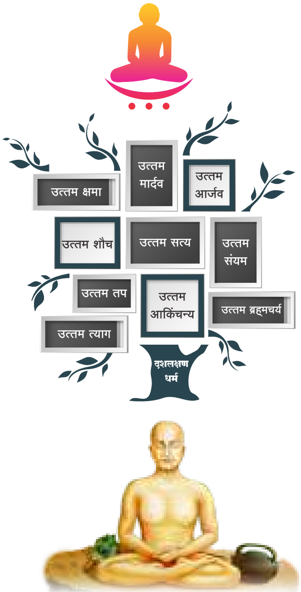

बंदर जैसा यह मन चंचल इसकी गति है न्यारी।
तूफानों से तेज दौड़ता देता है दुख भारी।।
मन–कपि को वश में करने को पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री मनविषयवर्जनरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

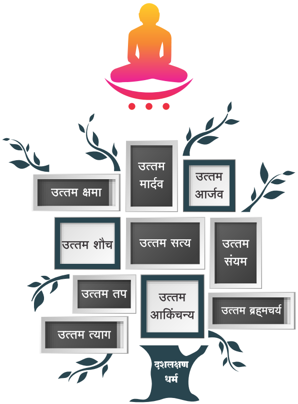

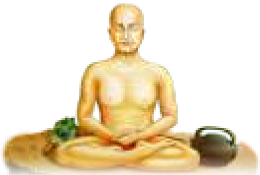

सब जीवों पर समता धारूँ समभावी हो जाऊँ।
तप संयम करने की इच्छा को साकार बनाऊँ।।
आर्त–रौद्र भावों के क्षयहित पंचेन्द्रिय मन कर वश।
उत्तम संयम धर्म सँवारूँ निज का ध्यान करूँ बस।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिकरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

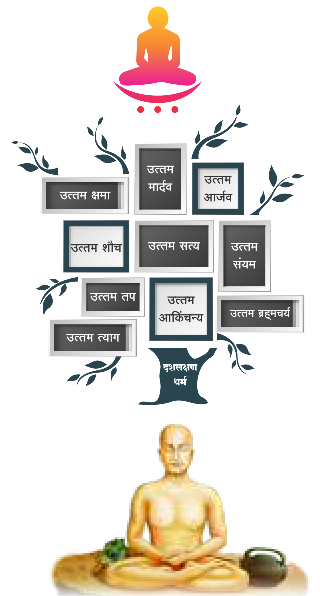

यदि प्रमादवश संयम में कुछ दोष लगे तो स्वामी।
प्रायश्चित्त ले उन्हें निवारूँ सुन लो अन्तर्यामी।।
छेदोपस्थापन संयम हो मुनिपद सार्थक हो प्रभु।
उत्तम संयम धर्म धार कर निज को ही ध्याऊँ प्रभु।।

ॐ ह्रीं श्री छेदोपस्थापनारूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

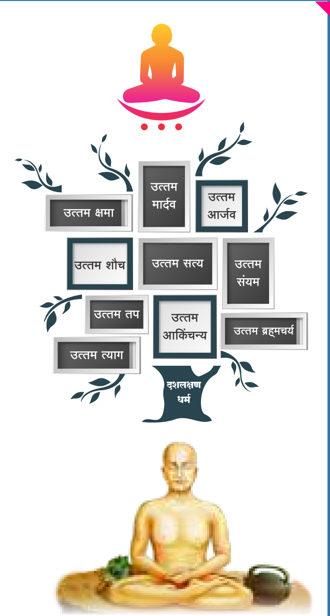

विविध ऋद्धियाँ भी हों तो प्रभु उनको नहीं निहारूँ।
दोष रहित हो गमन करूँ नित आत्मस्वरूप सँवारूँ।।
जीवों का रक्षक है यह परिहारविशुद्धि संयम।
उत्तम संयम धर्म धार कर उर नाशूँ सर्व असंयम।।

ॐ ह्रीं श्री परिहारविशुद्धिरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

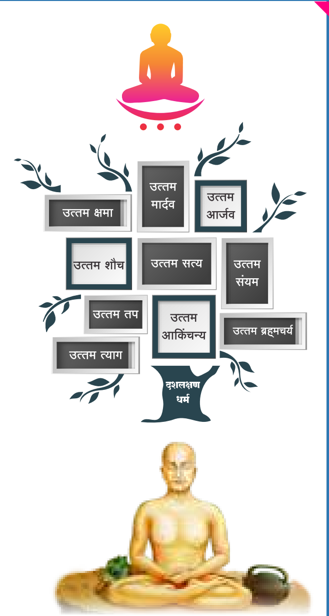

सर्व कषायें क्षय होतीं पर लोभ अल्प रह जाता।
क्षायिक श्रेणी है पर थोड़ा समय शेष रह जाता।।
सूक्ष्म सांपराय संयम भाऊँ भव-भावों से रीतूँ।
उत्तम संयम धर्म धार उर पंचेन्द्रिय मन जीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मसाम्परायरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

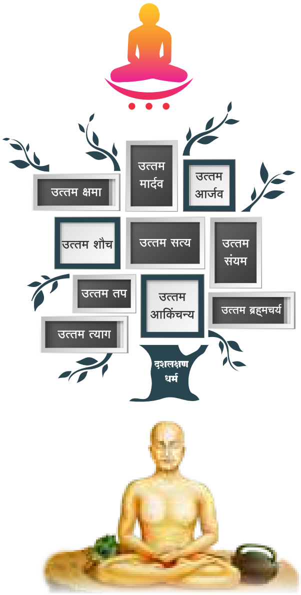

यथाख्यात चारित्र सजा कर मोह सर्वथा नाशूँ।
केवलज्ञान लब्धि उर पाऊँ पद सर्वज्ञ प्रकाशूँ।।
यथाख्यात संयम की महिमा निज अंतर में धर लूँ।
उत्तम संयम धर्म धार उर चारों गति दुख हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री यथाख्यातरूपसंयमधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

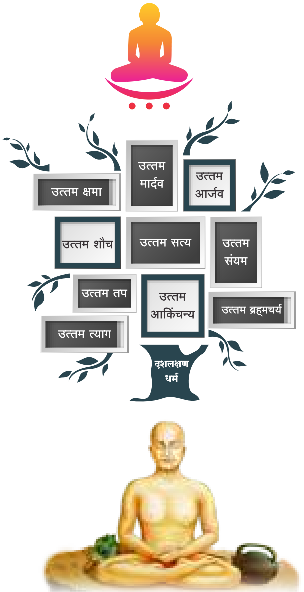

इसप्रकार बहु विधि संयम है मुनि बन संयम धारूँ।
सर्वकषाय भाव को जीतूँ भव संकट निरवारूँ।।
मोक्ष प्राप्ति का साक्षात् कारण संयम ही मैं धारूँ।
भावलिंग का वैभव पाकर निज को पार उतारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

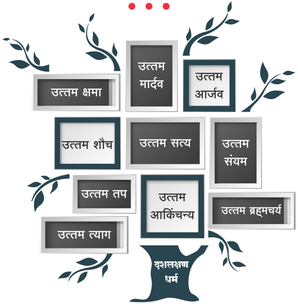

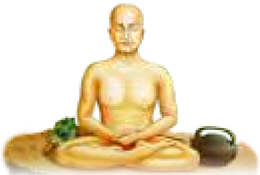

जयमाला

(छन्द–ताटंक)

अन्तरंग बहिरंग आस्रव से निवृत्ति ही संयम है।
सम्यग्दर्शन ज्ञान पूर्वक जो संवर है संयम है।।
सम्यग्दर्शन बिना मोक्ष का होता सच्चा लक्ष्य नहीं।
सम्यग्दर्शन बिना आत्मा हो सकता प्रत्यक्ष नहीं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सम्यग्दर्शन बिना आत्मा हो सकता है दक्ष नहीं।
सम्यग्दर्शन की भू पाए बिन व्रत रूपी वृक्ष नहीं।।
समकित बिन चारित्र व्यर्थ है व्यर्थ यम नियम संयम है।
अन्तरंग बहिरंग आस्रव से निवृत्ति ही संयम है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

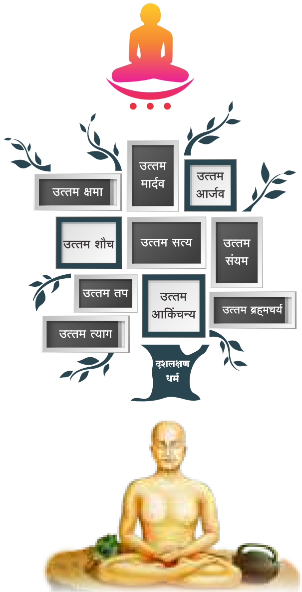

संयम के बिन भव का प्राणी हो सकता है मुक्त नहीं।
संयम बिन कैवल्य लक्ष्मी से हो सकता युक्ति नहीं।।
संयम के बिन कर्म नाश हों ऐसी कोई युक्ति नहीं।
संयम के बिन पूर्ण शुद्धि हो ऐसी कोई शक्ति नहीं।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

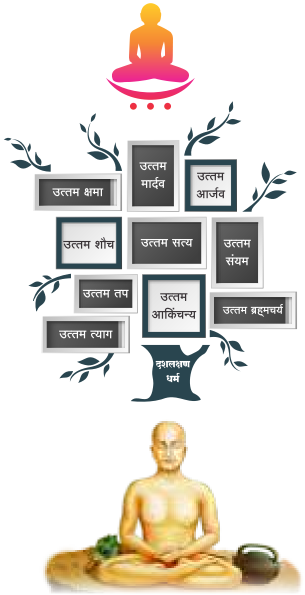

सप्तप्रकृति से रहित जीव को क्षायिक अथवा उपशम है।
अन्तरंग बहिरंग आस्रव से निवृत्ति ही संयम है।।
षट्कायिक की रक्षा करना पंचेन्द्रिय मन वश करना।
विषय शत्रु से सावधान हो निज स्वरूप में ही चरना।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

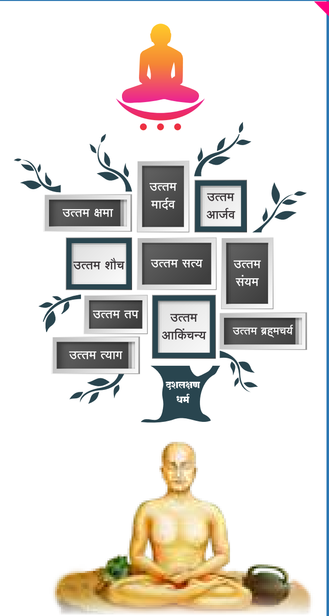

नर्क स्वर्ग पशुगति में दुर्लभ सो संयम उर में धरना।
नर तन पाकर भी यदि चूके तो भव–कूप बीच गिरना।।
बिना आत्मा की प्रतीति के बाकी सभी असंयम है।
अन्तरंग बहिरंग आस्त्रव से निवृत्ति ही संयम है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

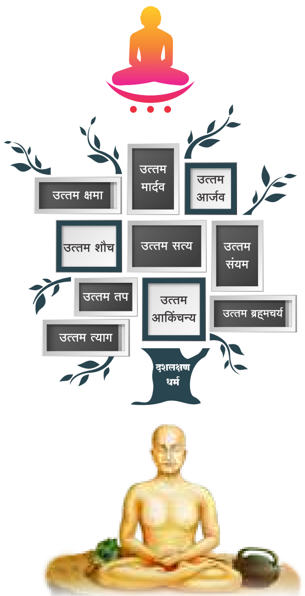

जब संयम की बजे बाँसुरी तभी धन्य यह नरतन है।
जब संयम के घुँघरू छनकें तभी धन्य यह जीवन है।।
जब संयम की जगे रागिनी लगे आत्मा की धुन है।
निज संयम की शहनाई की लय में ज्ञानी तन्मय है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

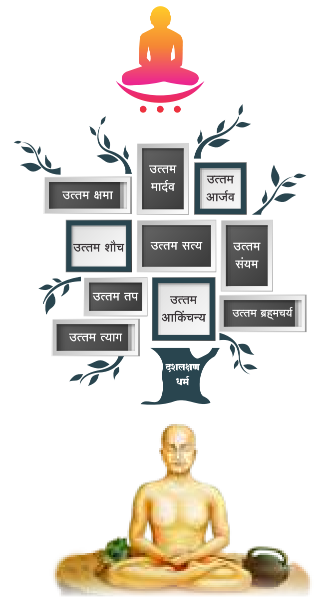

दुर्लभ आत्मबोधि पाने का यही एक सच्चा क्रम है।
अन्तरंग बहिरंग आस्रव से निवृत्ति ही संयम है।।
चरितमोह वश लेश न संयम समकित धारी अव्रती।
एकदेश संयम का धारी कहलाता है देशव्रती।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

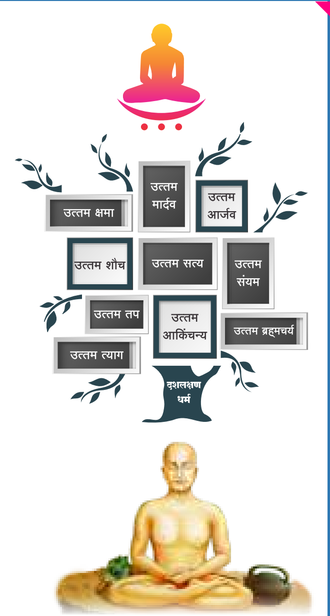

पूर्ण देश संयम का धारी कहलाता है महाव्रती।
यथाख्यात चारित्र पूर्ण पा होता है सर्वज्ञ यती।।
देव इन्द्र अहमिन्द्र तरसते हमें सुलभ यह हरदम है।
अन्तरंग बहिरंग आस्रव से निवृत्ति ही संयम है।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

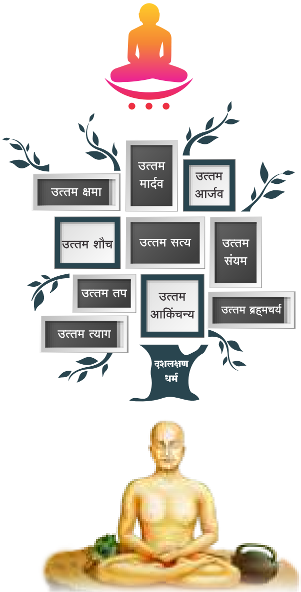

आशीर्वाद

(छन्द–सोरठा)

संयम धर्म महान जो भी धारे भाव से।
पाएगा निर्वाण जिन प्रभु की कथनी यही।।

इत्याशीर्वादः

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

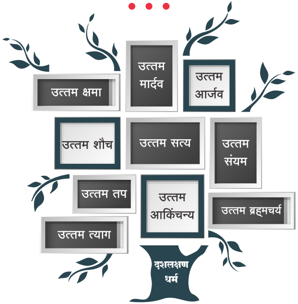

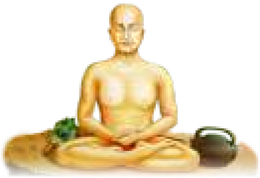

-: जाप्य मंत्र :-

॥ ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय नमः ॥

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु